लोकविद्या कला समागम इन्दौर

आषाढ़ अमावस, सोमवार, 17 जुलाई 2023

स्थान : दादा साहब मोघे सभागार, पागनीसपागा, इन्दौर

भागीदारी का निमंत्रण

<u>आयोजक</u>

लोकविद्या कला केन्द्र इन्दौर

1924डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

तीसरा सत्र
सांय 6 से 9
कला सृजन का अखाड़ा। कलाकारों की तरकश के तीर।

लोकविद्या कला केंद्र इंदौर एक ऐसा स्थान है जहां पर विभिन्न कलाविधाओं के स्थानीय कलाकार और कलाप्रेमी, लोक विद्याधरों से संवाद करते हैं।लोकविद्या के दावे को नई कला रचनाओं से मजबूत करते हैं।
पिछले दिनों से जो कला कार्य हो रहा है उसको इस सत्र में सबके साथ साझा किया जाएगा।
यह एक कला ज्ञान–पंचायत ही है जिसमें सबकी भागीदारी से समाज सृजन का कला मार्ग प्रशस्त करने की बात होना है।

6 से 7	**नृत्यकला** श्रीमती जयश्री तांबे एवं शिष्यों की प्रस्तुति
7 से 8	**नाटक** श्री शरद शबल द्वारा नये नाटकों के निर्माण पर बातचीत।
8 से 9	**संगीत** गैर फिल्मी गीतों का निर्माण। गायकों और वाद्य कलाकारों की प्रस्तुतियाँ।

<u>निवेदन</u>

लोकविद्या समन्वय समूह इंदौर इस आयोजन में,समाज के सभी ज्ञानियों को अपनी बात रखने के लिए आमंत्रित करता है।

मुख्य रूप से अलग–अलग कला विधाओं के कलाकार और कला प्रेमी, इस आयोजन में अपनी बात रखेंगे तो समाज सृजन का कला मार्ग प्रशस्त होगा।

लोकविद्या कला समागम में हर कोई अपनी भागीदारी अपने तरीके से कर सकता है। ना तो यह संस्था है और न ही यह किन्हीं नियम–कायदों में क़ैद संगठन है।

यह लोकविद्या में और अन्य ज्ञानियों में समन्वय का उद्देश्य लिए सामान्य लोगों का समूह है।
लोग भागीदारी की पहल लेंगे तो बात दूर तक जाएगी इसका विश्वास है।

<u>सम्पर्क</u>

दाजी – 6263686195
लोकविद्या समन्वय समूह इन्दौर
1924डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

पहला सत्र

सुबह 11 से 1

समाज सृजन का कलामार्ग

हम सब देख रहे हैं कि इंदौर शहर में कलाकारों और कला प्रेमियों की सक्रियता कुछ बढ़– सी गई है। बड़े पैमाने पर शहर की दीवारों पर चित्रकारों के बनाए चित्र देखने को मिल रहे हैं। सफाई अभियानों में संगीतकारों– गीतकारों को तवज्जो दी जा रही है।ऐसे ही अलग–अलग विषयों के लिए फिल्मांकन, नाटक, स्ट्रीट– शो जैसी कलाविधाओं का भी योगदान देखने को मिल रहा है। इस संदर्भ में इस सत्र पर कुछ बातचीत होना है। कुछ प्रस्तावों के इर्द–गिर्द उस चर्चा को सकारात्मक रूप दिया जा सकता है।

11 से 11.30	समाज सृजन में कलाकार कैसे योगदान दे सकता है?
11.30 से 12	विभिन्न कला विधाओं के कलाकारों और कलाप्रेमियों की पहल।
12 से 1	फिल्मांकन लघु–फिल्म निर्माण के नए विषय। कुछ प्रस्तुतियाँ।

प्रस्ताव

(१)जिस प्रकार से शहर में कलाकारों की भागीदारी बढ़ती दिख रही है वैसी ही कलाकारों की भागीदारी छोटे कस्बों और गांवों में भी संभव है। इस वातावरण में स्थानीय कलाकारों को बड़ी संख्या में मान–सम्मान और मूल्य प्राप्त करने का यह सुनहरा अवसर है।

(२) इंदौर शहर और मालवा– निमाड़ अंचल की संत परंपराओं से जुड़े ज्ञानी, कलाकार और कला प्रेमियों को एक मंच पर कैसे लाया जा सकता है? इंदौर शहर और आसपास के युवा कला साधकों को भी एक मंच कैसे प्रदान किया जा सकता है ?

दूसरा सत्र

दोपहर 2 से 5

सत्संगीयों की संतवाणी

बसवण्णा, गुरूनानक, कबीर, रविदास, रामदेव बाबा, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, श्री नारायण गुरू जैसे संतों ने समाज के बीच रहकर समाज को समय–समय पर आगाह किया और समाज सृजन के नए रास्ते खोले। निरंतर गतिशील समाज में बदलती परिस्थितियों के अनुरूप समाज का नित्य सृजन कैसे हो इस पर आज भी हमें संतों के ज्ञान का सहारा लेना होगा।

इस सत्र में इन्दौर और मालवा निमाड़ अंचल के सत्संगी अलग–अलग संतों की वाणी को प्रस्तुत करेंगे।

2 से 3	गुरूवाणी भजन मण्डली श्री लाखन मण्डलोह एवं श्री विक्रमसिंह बोरडीया भजन समूह इन्दौर
3 से 4	मालवा–निमाड़ के सत्संगी श्री घनश्यामभाई एवं श्री जगदीश बाबा समूह ग्राम भकलाय–भीलामी।
4 से 5	संतों की वाणी श्री भानूभाई भगवती, श्री परसराम जी, श्री किशोरभाई, श्री चंपालाल भाई एवं साथी इन्दौर

प्रस्ताव

(१)छोटे–छोटे समाजों का ज्ञान, विश्वविद्यालय के ज्ञान से अलग होता है।इस लोकविद्या के बल पर जीवन यापन करने वाले सत्संगीयों की कला और ज्ञान को फैलाना और उनके समाजों को मजबूत करना ।

(२)लोकविद्या कला समागम के आयोजन मालवा–निमाड़ अंचल के गांवों में करना। अनेक संतों की बातों को रखने के लिए सत्संगी समूह बनाना।